(६) सोलह सोलह सपने...

सोलह सोलह सपने देखे हैं आज, फल बतलाओ जी महाराज,
नृप सिद्धार्थ का यह दरबार, आज सुनाओ जी महाराज॥ टेक॥

हाथी भी देखा वृषभ भी देखा, सिंह और लक्ष्मी का अवतार,
बलवान होगा पुत्र हे मात, कर्मठ होता तेरा लाल;
प्रतापी सुत की है तू मात, ज्ञान लक्ष्मी का धरनार॥ 1॥

माला भी देखी चन्द्र भी देखा, देख चढ़ता सूर्य प्रकाश,
कोमल होगा पुत्र महान, शीतल होगा वह गुणखान;
काटेगा अज्ञान अन्धकार, होगा वह तो सूर्य समान॥ 2॥

कलश भी देखा, मीन भी देखी, सागर और सरोवर शान्त,
गम्भीर होगा सिन्धु समान, होगा ज्ञान-सरोवर खान;
नृप सिद्धार्थ का यह दरबार, आज सुनाओ जी महाराज॥ 3॥

सिंहासन और देव विमान, देखा रत्नों का भण्डार,
जीतेगा तीन लोक को नाथ, लायेगा उन्हें देव-विमान;
अवधिज्ञान विशाल भवन, सोहेगा तो रत्न समान॥ 4॥

उज्ज्वल उज्ज्वल अग्नि समान, लाल करेगा अहो निहाल,
मुख में स्वर्ण वृषभ जो आय, मानो तीर्थङ्कर अवतार;
सफल हुई नारी पर्याय, त्रिभुवन है नतमस्तक आज॥ 5॥